अकबर के नवरत्न अबुल फजल

डॉ0 मनोज कुमार

अबुल फजल के पूर्वज सदियों पहले अरबवासी थे और कालांतर में सिंध के रेल गॉव (वर्तमान पाकिस्तान) में बसने के उपरांत भ्रमण के क्रम में भारत में नागौर में जम–बस गए और यहीं सन 911 हिजरी में 'शेख मुबारक का जन्म हुआ। शेख मुबारक जीवन की कठिनाइयों एवं आर्थिक समस्याओं से जूझते हुए ज्ञानार्जन के क्रम में सन 1543 में आगरा आए और जमुना नदी के किनारे रामबाग में बस गए ! एक प्रसि) क्युरेश परिवार में शादी की तथा शिक्षण कार्य में लग गए। ख्याति प्राप्त असाधारण विद्वान शेख मुबारक के पुत्र रूप में अबुल फजल का जन्म छहः मुहर्रम सन 958 हिजरी (1551 ई–) में हुआ ! वह मात्र 15 महीने की अवस्था में स्पष्ट बोलने लगा था तथा 5 वर्ष की अवस्था में उसकी योग्यता का आभास हो गया था। वह 12 भाई बहन थे तथा उसका प्रारंभिक जीवन ?घोर आर्थिक संकट में गुजरा। अबुल फजल और उसके अग्रज शैख फैजी पर उसके पिता शेख मुबारक की विद्वता एवं क्षमता का व्यापक प्रभाव तो पड़ा ही बल्कि योग्यता में तो अबुल फजल उनसे कहीं आगे निकल गए। गरीबी की कब्र पर विद्वता का पताका फहराते अबुल फजल की गाथा हर सहृदय व्यक्ति को रोमांचित करती है और इस विद्वता कि कद्र एवं निर्धनता से निजात तब मिलती है जब हिजरी 981 में अग्रज फैजी के बाद अबुल फजल का प्रवेश राजदरबार में होता है। इसकी वाकपटुता, तर्कप्रियता और धार्मिक उदारवादिता से मुल्लागण जल–भून जाते हैं। खासकर जब अबुल फजल बादशाह के साथ तोता मैना की तरह बातें करते थे !